International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 8 Ver. III || August 2018 || PP 76-77

''आधुनिक भारतीय भित्ति चित्रकला का स्वरूप''

डॉ0 अलका तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
एन0ए0एस0 कॉलेज, मेरठ

आधुनिक भारतीय कला के बीज 19वीं सदी के उत्तरार्ध में छिपे हुए हैं। इसी समय की परिस्थितियों के आधार पर आगे की कला का भविष्य तय हुआ। 1850 ईसवी से लेकर 20वीं सदी के आरंभिक 50 वर्षों में राजनीतिक आर्थिक एवं सामाजिक अस्थिरता ने यहाँ के जनजीवन को गहरे तक प्रभावित किया। कलाकारों की तकनीकी विशेषताओं और विषय गत अभिरूचि में भी परिवर्तन आया। कलाकार विदेशी कलाकारों से परिचित होने लगे।

राजा रवि वर्मा ने इसी समय में यूरोपीय तकनीक में भारतीय विषयों पर कई भवनों में चित्रांकन किया। राजा रवि वर्मा का यह प्रयास भारतीय कला की अवरूद्ध धारा को एक नया पथ दिखाने का संबल बना। बड़ौदा के महाराजा गायकवाड के कहने पर उन्होंने महल में कई भित्ति चित्र बनाएं, जो पुराणों के विषय पर आधारित थे।

इसी समय अंग्रेजों ने पश्चिमी कला की शिक्षा प्रदान के लिए भारत में 4 स्थानों पर कला महाविद्यालय खोलें। 1850 में मद्रास, 1854 में कोलकाता, 1857 में मुंबई व 1875 में लाहौर में महाविद्यालय खोले गए। इन विद्यालयों ने भारतीय कलाकारों की रूचियों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। इसी समय बंगाल शैली का अभ्युदय हुआ। इस शैली में अवनींद्र नाथ टैगोर, रविन्द्र नाथ टैगोर, आनंद कुमार स्वामी, नंदलाल बोस, ई0वी0 हैवेल आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वदेशी कला को पुनः स्थापित किया।

बीसवीं सदी के आरंभिक काल में भित्ति चित्रकला–

आधुनिक भारतीय कला का आरंभ बंगाल में 1895 ईसवीं से 1920 ईसवी के मध्य प्रचलित कला शैली से माना जाता है। अवनींद्र नाथ कोलकाता कला विद्यालय में प्राचार्य नियुक्त हुए उनके शिष्य देश के विभिन्न भागों में कला प्रचार करने लगे नंदलाल बोस शांतिनिकेतन में, असित कुमार हलदर लखनऊ में, विनोद बिहारी मुखर्जी वनस्पति विद्यापीठ राजस्थान में नवीन कलाधारा के प्रचार में लग गए। सभी में विनोद बिहारी मुखर्जी भित्ति चित्रकला में पारंगत थे एवं इनके भित्ति चित्र शांति निकेतन, वनस्थली, विद्यापीठ राजस्थान आदि स्थानों में पाए जाते हैं। यथार्थवादी, अतियथार्थवादी, घनवादी, अभिव्यंजनावाद, प्रभाववादी इत्यादि प्रवृत्तियों को भारतीय कलाकारों ने अपनी कृतियों में दर्शाना शुरू कर दिया था। रविन्द्र नाथ टैगोर ने अभिव्यंजनावाद, गजेन्द्र नाथ ने धन वाद, अमृता शेरगिल ने प्रभाव वाद, यामिनी राय ने लोक कला शैली को आधार बनाया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की भित्ति चित्रकला–

आधुनिक कला के विकास का अगला चरण स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की कला प्रवृत्तियों से प्रारम्भ होता है। यद्यपि स्वतन्त्रता पूर्व ही कला के क्षेत्र में स्वतन्त्र चिंतन एवं राष्ट्रीय चेतना का उन्मेष हो चुका था। अनेक कला संगठन इस समय बन रहे थे, जैसे कोलकाता ग्रुप, प्रोग्रेसिव आट्र्स ग्रुप, शिल्पी चक्र आदि।

तत्पश्चात् 1943 में कलकत्ता ग्रुप बनाया गया। जिनके प्रमुख सदस्यों में प्रदोष दासगुप्ता, गोपाल घोष, नीरद मजूमदार, हेमंत मिश्र, परितोष्ज्ञ सेन आदि कलाकार सम्मिलित थे। 1948 में मुंबई में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप की स्थापना हुई। इस ग्रुप समकालीन कला यात्रा का स्थिरता लिए हुए पड़ाव स्वरूप था। जिसके प्रभाव आगे की आधुनिक कला पर प्रभावपूर्ण ढंग से हुआ। इस ग्रुप के प्रमुख कलाकार आरा, राजा, सूजा, हुसैन, गाड़े, बाकडे व गायतोंडे आदि थे। वे सभी कलाकार प्रयोगवादी थे। पैड ग्रुप की सबसे महत्वपूर्ण देन यह रही कि उसने कला को राष्ट्रीय दायरे से बाहर निकाल कर अन्तर्राष्ट्रीयवाद से पूर्णतया जोड़ दिया।

1949 नई दिल्ली शिल्पी चक्र की स्थापना हुई। ग्रुप से जुड़े कलाकारों में बी0सी0 सान्याल, केवल कृष्ण, कृष्ण खन्ना, के0एस0 कुलकर्णी, सतीश गुजराल, धनराज भगत आदि थे। सतीश गुजराल जी भित्ति चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। शिल्पी चक्र ने भारतीय समकालीन कला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसका ऐतिहासिक महत्व है।

कोलकाता मुंबई और दिल्ली यह तीन केन्द्र पूर्ण रूप से सक्रिय थे। इसके साथ संपूर्ण भारत में कला विद्यालयों की स्थापना तथा अनेक कलाकार ग्रुप के द्वारा कला संभावनाओं को आगे बढ़ाने का प्रयास निरंतर चलता रहा था।

समकालीन शती में भारतीय भित्ति चित्रकला का स्वरूप–

वर्तमान समय में समकालीन भित्ति चित्रकला का स्वरूप, प्राचीन भित्ति चित्रकला की तुलना में पूर्णता परिवर्तित हो गया है। चित्रों के विषय, आश्रय दाता, उद्देश, माध्यम आदि सभी में बदलाव हुआ है। प्राचीन कला धर्म से प्रेरणा लेकर विकसित हुई थी परन्तु आधुनिक कलाकार स्वतन्त्र है वह अपनी विचारों की अभिव्यक्ति स्वतन्त्र रूप से बिना किसी बाह्य प्रभाव के कर सकता है।

समकालीन कला में कलाकार अपने चित्रों में नवीन तकनीक का प्रयोग करते हैं। वर्तमान शताब्दी में नवीन प्रयोग कला का पर्याय बनते जा रहे हैं।

कलाकार सामूहिक पहचान से दूर व्यक्तिगत मौलिकता की और आकृष्ट हो रहे हैं। आज परंपरागत कला शैलियों में तकनीकों का स्थान नवीन प्रयोगों व यंत्रों ने ले लिया है। इंस्टालेशन आर्ट, डिजिटल आर्ट, मिश्रित माध्यम आदि कला की नवीन तकनीके है। आज के परिवेश में कला को लेकर विचारणीय प्रश्न भी उठते हैं। कला के प्रयोजन व कला के बाजारीकरण इन दो प्रमुख समस्याओं को लेकर दुविधा पूर्ण स्थिति है। आजकल की सभी विधाओं चित्र, मूर्ति, व्यवहारिक, ग्राफिक कला आदि में सह–अस्तित्व है। किन्तु यह खेद जनक स्थिति है कि समकालीन जीवन का प्रतिबिंब होते हुए भी समकालीन कला जीवन का अंग नहीं बन सकी। समकालीन कला कृतियों में वैज्ञानिकता एवं उच्च बौद्धिकता समाहित है। इसी कारण संप्रेषण की समस्या आती है। यह कृतियाँ एक वर्ग विशेष (बौद्धिक वर्ग) को तो प्रभावित करती हैं। किन्तु साधारण जन इनका आनंद नहीं ले पाता। प्राचीन भारत की कला में एक सरलीकरण था परन्तु समकालीन कला में बौद्धिकता गूढ़ अर्थ छिपा रहता है। जिसके कारण सामान्य मनुष्य अर्थ को समझने में एवं चित्र के दृश्य आनंद से अनभिज्ञ रह जाता है। भूमंडलीकरण के कारण बाजारवाद का जो विकृत रूप संपूर्ण विश्व में फैला दिखाई देता है। उससे भारत का समकालीन कला जगत भी अछूता नहीं है। कला का अस्तित्व खतरे में है। इन दुष्प्रभाव से बचकर वर्तमान परिस्थितियों में सामंजस्य बनाते हुए कला से तादात्म्य स्थापित करना आवश्यक हो गया है।

कला सौंदर्य दर्शन के साथ–साथ मनुष्य को संवेदनशील बनाने का कार्य भी करती है। हर मनुष्य में कला के प्रति किसी न किसी प्रकार से आकर्षण रहा है। एक कलाकार सौंदर्य अभिव्यक्ति के साथ–साथ समाज को संस्कारित भी करता है। अपने चित्रों से वह समाज को सही व गलत के भेद का संदेश देता है एवं सामाजिक अन्याय को लोगों को दिखाकर उन्हें संवेदनशील बनाता है। अतः यह आवश्यक है कि कलाकार अपनी कला में सरलीकरण लेकर आए जिससे आम नागरिक भी कला रसास्वादन कर सके कर सके। 21वीं शताब्दी के आरंभिक दशक में कला कि उपरोक्त समस्याओं के निराकरण के साथ ही कला की मूल स्वरूप की रक्षा का उत्तरदायित्व भी कलाकारों पर है, वह भी नव कलाकारों पर है।

युग के प्रत्येक चरण में परिवर्तन आता है और अपने साथ सांस्कृतिक प्रतिक्रियाएं लाता है कला बहुत बार इन परिवर्तनों से बदलती हुई दिखाई दे सकती है किन्तु वह अपने मूल चेतना में वही रहती है जो उसकी प्रकृति होती है। विभिन्न समय पर आए अवरोध उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते। वह यथावत रहती है और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रहती है नव रूप और आकार लेकर। समकालीन भित्ति चित्रकारों में केजी सुब्रमण्यम, विनोद बिहारी मुखर्जी, सतीश गुजराल जी, अंजली इला मेनन व सुरेश नायर जी आदि का नाम उल्लेखनीय है।

सरकार के प्रयत्न व चित्रकार की निष्ठा द्वारा भित्ति चित्रों की रचनात्मकता में नित नए आयाम खोजे जा रहे हैं। भारत के विभिन्न शहर आज भित्ति चित्रों से अलंकृत है जो भारतवासियों के लिए गर्व का विषय है। भारतीय चित्रकला आधुनिकता के साथ भारतीय परंपरा को जीवंत रखे हुए हैं जो समकालीन चित्रों की विषय वस्तु, शैली में स्पष्ट दिखाई देती है।

संदर्भ सूची

1- S. Parmasivan & the wall paintings in the Bagh caves an investigation into their methods PIAS vol. 1993, section A-pp. 145-149.

2. डॉ0 नाथू लाल वर्मा– राजस्थानी चित्र शैली की विभिन्न चित्रण विधियां (2009), पृ0सं0 62–81

3. आर0के0 मुखर्जी– भारतीय संस्कृति और कला, पृ0सं0 34–42

4. वाचस्पति गैरोला भारतीय चित्रकला इलाहाबाद 1963, पृ0सं0 45–57